रामचरितमानस

-एक अंतरीय झलक

कृपाल सिंह

सारांश

1. दूसरों से ऐसा सलूक करो जैसा तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ सलूक करें, यही धर्म है और धर्म की दूसरी निशानी है कि उसका नतीजा हमेशा सुख होता है।
2. प्रीति का नाम भक्ति है। भक्ति, प्रीति और प्रेम–ये तीनों एक ही के नाम हैं।
3. वैराग और ज्ञान दोनों मर्द हैं, भक्ति स्त्री की तरह है। बादशाह महल में सो रहा है, आधी रात को भी वहां जा सकती है और वैराग और ज्ञान दोनों बाहर दरवाजा खटखटाएंगे। मर्द स्त्री से मारा जा सकता है मगर स्त्री स्त्री को मोहित नहीं कर सकती।
4. रामायण में भगवान राम कह रहे हैं कि मुझ ही को गुरु, मां, बाप, भाई और मालिक समझ कर मेरी दृढ़ सेवा करे। यह है भक्ति, सब कुछ उसी को मानो। जिस के अंतर मेरी भक्ति है उस की क्या अवस्था होगी? कि मेरे गुणों के गाते हुए दिल भर आएगा, ज़बान गद गद हो जाएगी, ज़बान से पूरा लफ्ज़ भी न निकलेगा, आंखों से आंसू बहेंगे।
4. प्रेम में गरूर कहां, प्रेम में दिखावा कहां, वह तो मरा पड़ा है दुनिया से। दिखावे में यह लेना है, यह लेना है– ऐसी बातें होती हैं। कहते हैं जिसके अंतर दिखावा है, जिस के अंतर पाखंड है, गरूर (अहंकार) है और काम भावना है वहां फिर प्रभु नहीं बसता।
5. संत दूसरों को सुख पहुँचाने के लिए दुख उठाते हैं और असंत दूसरों को दुख पहुँचाने के लिए दुख उठाते हैं।
6. अहिल्या जो पत्थर हो गई थी, उसे पैर छुआ कर जिन्दा कर दिया राम ने, एक का उद्धार कर दिया और नाम ने गये – गुज़रे, बुरे से बुरे इन्सानों का, करोड़ों पापियों का उद्धार कर दिया। नाम बड़ा हुआ कि नहीं? असल बात क्या है कि नाम उस पावर का नाम है जो सबको बनाने वाली है। अवतारों को बनाने वाली भी है और सन्तों को बनाने वाली भी है।
7. अवतारों का काम है दुनिया को बाकायदगी में ला कर उस का स्थापन करना ताकि वह आबाद रहे और सन्तों का काम दुनिया को, क्या कहना चाहिए, उजाड़ना है। सुरत, मन – इन्द्रियों के घाट के ऊपर आ कर नाम से लग गई तो वह दुनिया में क्यों आयेगी? दुनिया तो उजड़ गई।
8. कहते हैं, कहाँ तक 'नाम' की महिमा ब्यान की जाये, सच बात तो यह है कि भगवान राम भी 'नाम' के गुणों का बखान नहीं कर सकते। एक जगह इज़हार हो रहा है उसका, एक पोल (खम्भा) है, एक पावर हाऊस है बड़ा भारी। पोल की जितनी ताकत होगी, उतना ही इज़हार करेगा बिजली घर का, नहीं तो वह फट जायेगा। इन्सानी पोल पर जितना उस शक्ति का इज़हार हो सकता है, उतना ही होगा।
9. भक्ति का असूल है कि मालिक की रज़ा में रहना और जो कुछ, दुख सुख आ जाये, यह समझे कि जैसे सोने को कुन्दन बनाया जा रहा है और जो उसके वचन हों, वे हमारे हृदय में बसें और हम उसके हृदय में बसें।
10. एक परमात्मा से प्रेम करो, परमात्मा सब में है, सब से प्रेम करो और किसी के दिल को न दुखाओ।

कृपाल रूहानी सत्संग सभा (भबात)
1206, सैक्टर 48 बी, चण्डीगढ़
E-mail: gssaini1412@gmail.com